MARKING SCHEME
ECONOMICS (576)

Class 12th **SAMPLE PAPER** **SET: D** **M.M:80**

Q.NO	EXPECTED ANSWER/VALUE POINTS		MARKS
1	b) व्यष्टि अर्थशास्त्र	b) Micro Economics	1
2	a) घटती है।	a) decreasing	1
3	a) धनात्मक	a) Positive	1
4	b) पूर्ण प्रतिस्पर्धा	b) Perfect competition	1
5	c) वस्तु की मांग और पूर्ति दोनो द्वारा होता है	c) is caused by both demand and supply of goods	1
6	क्रमवाचक	Ordinal	1
7	पूर्ति का विस्तार	Extension of supply	1
8	अल्पकाल	Shortrun	1
9	d) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।	d) Assertion (A) is false but Reason (R) are true.	1
10	a) अभिकथन(A) और कारण (R) दोनो सही है और कारण (R) अभिकथन (A) की सही व्याख्या है।	a) Both Assertion (A) and Reason (R) are true and Reason (R) is the correct explanation of Asseration(A)	1
11	अर्थशास्त्र में, मांग अनुसूची एक तालिका है जो विभिन्न मूल्य स्तरों पर किसी वस्तु या सेवा की मांग की गई मात्रा को दर्शाती है। एक मांग अनुसूची को एक चार्ट पर निरंतर मांग वक्र के रूप में रेखांकन किया जा सकता है जहां x-अक्ष कीमत का प्रतिनिधित्व करता है और y-अक्ष मात्रा का प्रतिनिधित्व करता है। **अथवा** बंधी लागत एक ऐसा व्यय है जो बिक्री या उत्पादन की मात्रा बढ़ने या घटने पर नहीं बदलता है। बंधी लागत वे खर्च हैं जो एक व्यवसाय द्वारा किए जाते हैं जो उत्पादित वस्तुओं या प्रदान की गई सेवाओं की मात्रा के साथ नहीं बदलते हैं। ये लागत सीधे तौर पर किसी उत्पाद के निर्माण या सेवा प्रदान करने से जुड़ी नहीं हैं।	In economics, a demand schedule is a table that shows the quantity demanded of a good or service at different price levels. A demand schedule can be graphed on a chart as a continuous demand curve where the Y-axis represents price and the X-axis represents quantity. **OR** Fixed cost is an expense that does not change as sales or production volume increases or decreases. Fixed costs are expenses incurred by a business that do not change with the amount of goods produced or services provided. These costs are not directly associated with manufacturing a product or providing a service.	1.5 1.5 3
12	आपूर्ति की लोच को किसी वस्तु की कीमत में बदलाव के लिए आपूर्ति की गई मात्रा की प्रतिक्रिया की डिग्री के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इस पद्धति के तहत, आपूर्ति की लोच को आपूर्ति की मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन को कीमत में प्रतिशत परिवर्तन से विभाजित करके मापा जाता है। E_s = पूर्ति में प्रतिशत परिवर्तन/ कीमत में प्रतिशत परिवर्तन	Elasticity of supply can be defined as the degree of responsiveness of the quantity supplied good to a change in its price. Under this method, elasticity of supply is measured by dividing the percentage change in quantity supplied by the percentage change in price. E_s = Percentage change in supply/ Percentage change in price	3
13	कारक के प्रतिफल के नियम के अनुसार, अन्य कारकों को स्थिर रखने और जब परिवर्तनीय कारक में वृद्धि होती है, तो कुल उत्पाद पहले बढ़ती दर से बढ़ता है, फिर कम दर से बढ़ता है और अंततः घट जाता है। कारक के प्रतिफल का नियम कुल उत्पादन के व्यवहार से संबंधित होता है। यह एक अल्पकालिक अवधारणा है।	According to the law of marginal returns, keeping other factors constant and when the variable factor increases, the total product first increases at an increasing rate, then increases at a decreasing rate and finally decreases. The law of returns to a factor is	1.5+ 1.5

	कारक के प्रतिफल के तीन पहलू हैं: (i) कारक के बढ़ता प्रतिफल। (ii) कारक के लगातार प्रतिफल। (iii) कारक के घटते प्रतिफल। **अथवा** **पूंजीवादी अर्थव्यवस्था (बाज़ार अर्थव्यवस्था)** 1. एक ऐसी प्रणाली है जहां निजी संस्थाएं उत्पादन के कारकों जैसे श्रम, प्राकृतिक संसाधन या पूंजीगत सामान को नियंत्रित करती हैं। 2. पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में, मांग और आपूर्ति बल वस्तुओं और सेवाओं की कीमत को प्रभावित करते हैं। 3. पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन का मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना होता है। **समाजवादी अर्थव्यवस्था** 1. एक आर्थिक प्रणाली है जहां उत्पादन के कारक जैसे श्रम, प्राकृतिक संसाधन या पूंजीगत सामान सरकार के नियंत्रण में होते हैं। 2. समाजवादी अर्थव्यवस्था में, वस्तुओं और सेवाओं की कीमत सरकार की देखरेख और नियंत्रण में होती है। 3. समाजवादी अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन का मुख्य उद्देश्य आम जनता का कल्याण है।	related to the behavior of total production. This is a short-term concept. There are three aspects of return to a factor: (i) Increasing returns to the factor. (ii) Constant returns to the factor. (iii) Diminishing returns to the factor. **Or** **Capitalist Economy (market economy)** 1. A system where private entities control the factors of production such as labor, natural resources, or capital goods. 2. In a capitalist economy, demand and supply forces influence the price of goods and services. 3. In a capitalist economy, the main objective of production of goods and services is to earn profit. **Socialist Economy** 1. Is an economic system where the factors of production such as labor, natural resources, or capital goods are under the control of the government. 2. In a socialist economy, the prices of goods and services are under the supervision and control of the government. 3. The main objective of production of goods and services in a socialist economy is the welfare of the general public**.**	1.5+ 1.5
14	एकाधिकार प्रतियोगिता एक बाजार मॉडल है जिसमें कई कंपनियां अलग-अलग उत्पाद (गुणवत्ता, ब्रांडिंग, शैली और प्रतिष्ठा में भिन्न) पेश करती हैं और एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करती हैं। वे अपने ग्राहकों को जो सामान या सेवाएँ प्रदान करते हैं वे समान हैं लेकिन स्थानापन्न सामान नहीं हैं। 1. क्रेताओं और विक्रेताओं की अधिक संख्या 2. प्रत्येक फर्मे समान लेकिन भिन्न उत्पाद बनाती है। 3. फर्मो द्वारा उद्योग में निःशुल्क प्रवेश और निकास। 4. कंपनियां उत्पाद की गुणवत्ता, कीमत और उत्पाद का विपणन कैसे किया जाता है, इसके आधार पर प्रतिस्पर्धा करती हैं।	Monopolistic competition is a market model in which several companies offer different products (differing in quality, branding, style, and reputation) and compete with each other. The goods or services they provide to their customers are similar but not substitute goods. 1. Large number of buyers and sellers 2. Each firm produces similar but different products. 3. Free entry and exit by firms in the industry. 4. Companies compete on the basis of product quality, price, and how the product is marketed.	2+2
15	संतुलन कीमत वह कीमत होती है जहां वस्तु की मांग तथा पूर्ति बराबर होती है संतुलन कीमत पर खरीदार और विक्रेता दोनों कोई बदलाव की स्थिति में नहीं हैं। तकनीकी रूप से इस कीमत पर खरीदारों द्वारा मांगी गई मात्रा विक्रेताओं द्वारा आपूर्ति की गई मात्रा के बराबर होती है। जबकि समर्थन कीमत सरकार द्वारा किसानों को न्यूनतम आय सुनिश्चित कराने के लिए निश्चित की जाती हे। समर्थन कीमत संतुलन कीमत के ऊपर निर्धारित की जाती है।समर्थन मूल्य किसानों को उनके उत्पादों के लिए न्यूनतम मूल्य की गारंटी	Equilibrium price is the price where demand and supply of the commodity are equal. At equilibrium price, both buyers and sellers are in a position of no change. Technically at this price the quantity demanded by buyers is equal to the quantity supplied by sellers. Whereas the support price is fixed by the government to ensure minimum income to the farmers. The support price is set above the equilibrium price. Support price serves to guarantee	4

<table>
<tr>
<td></td>
<td>देने का काम करता है। वस्तुओं की कीमतें ऊंची रखने और किसानों के मुनाफे को बनाए रखने के लिए, सरकार का समाधान बाजार में पर्याप्त मात्रा में सामान खरीदना था ताकि कीमत पर दबाव डाला जा सके।</td>
<td>farmers a minimum price for their products.
To keep commodity prices high and maintain farmers' profits, the government's solution was to buy enough goods into the market to put pressure on prices.</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>16</td>
<td>खाद्य उपलब्धता अपकर्ष सिद्धांत के अनुसार भोजन की कीमत में वृद्धि होने के कारण निर्धन लोगों के लिए भोजन या खाद्य पदार्थो की उपलब्धता में होने वाली कमी।
इसे FAD सिद्धांत से भी जाना जाता है जिसे नोबल पुरस्कार विजेता प्रो. अमर्त्य सेन ने प्रतिपादित किया है। सिद्धांत के अनुसार जब किसी देश में प्राकृतिक आपदा के कारण भोजन की पूर्ति कम होने के परिणामस्वरूप उनकी कीमत इतनी बढ जाती है कि निर्धन लोगों के लिए उनको खरीद पाना मुशकिल हो जाता है। जिससे भुख से निर्धन लोगो की मृत्यु होने लगती है। स्थिति को अकाल की स्थिति कहा जाता है। सिद्धांत के अनुसार अकाल तथा यातायात के साधनों के अभाव में निर्धन लागों को मिलने वाले खाध उपलब्धता में कमी हो जाती है जिसके फलस्वरूप् उनकी अधिक मृत्यु होने लगती हे। इस सिद्धांत को हम एक रेखाचित्र की सहायता से समझ सकते है।
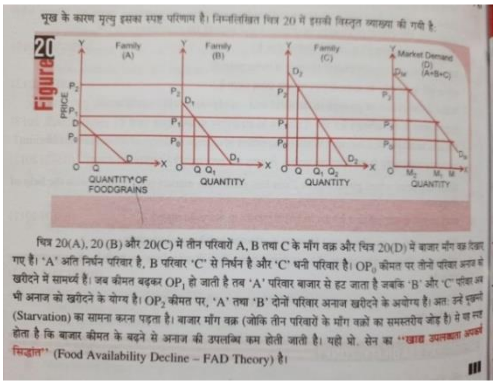

अथवा
जब मांग स्थिर रहती है तो आपूर्ति में एक सकारात्मक परिवर्तन आपूर्ति वक्र को दाईं ओर स्थानांतरित कर देता है, जिसके परिणामस्वरूप एक प्रतिच्छेदन होता है जिससे कम कीमतें और अधिक मात्रा प्राप्त होती है। दूसरी ओर, आपूर्ति में नकारात्मक परिवर्तन, वक्र को बाईं ओर स्थानांतरित कर देता है, जिससे कीमतें बढ़ जाती हैं और मात्रा घट जाती है।
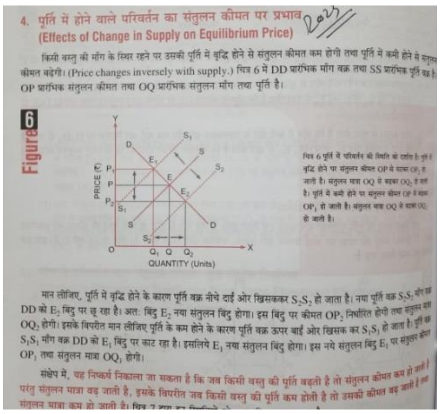
</td>
<td>According to the food availability degradation theory, there is a decrease in the availability of food or food items for poor people due to increase in the price of food. It is also known as FAD theory which was proposed by Nobel laureate Prof. Amartya Sen has propounded.
According to the theory, when food supply in a country is reduced due to a natural disaster, their prices increase so much that it becomes difficult for poor people to buy them. Due to which poor people start dying due to hunger. This situation is called famine situation.
According to the theory, due to famine and lack of means of transportation, there is a reduction in the availability of food to the poor people, as a result of which they start dying more. We can understand this principle with the help of a diagram.
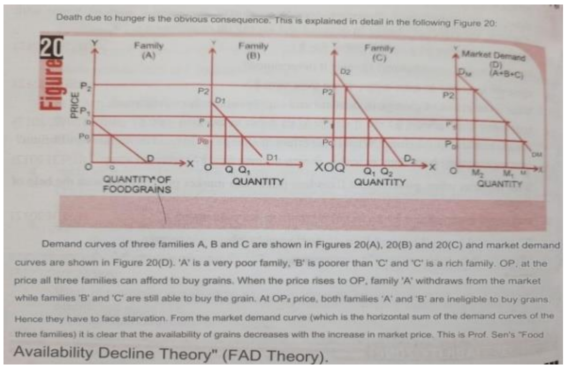

OR
When demand remains constant a positive change in supply shifts the supply curve to the right, resulting in an intersection that leads to lower prices and greater quantities. A negative change in supply, on the other hand, shifts the curve to the left, causing prices to increase and quantities to decrease.
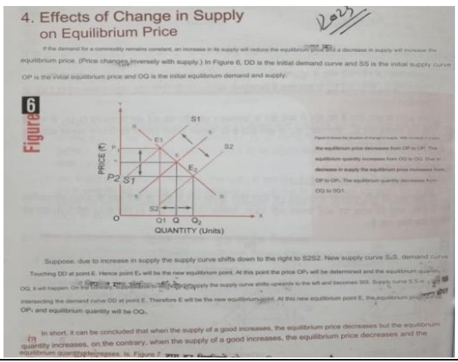
</td>
<td>2+2
+2

3+3</td>
</tr>
</table>

<table>
<tr><td></td><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr>
<td>17</td>
<td>
संतुलन की स्थिति में यह आवश्यक नही है कि फर्म को असमान्य लाभ अवश्य ही मिल रहे हो।
इस अवस्था में तीन स्थितियां हो सकती है।
1. फर्म को असामान्य लाभ मिल सकते है क्योंकि अल्पकाल में नई फर्मे उधोग मे प्रवेश नही कर सकती है।
2. फर्म को सामान्य लाभ मिल सकते है।
3. फर्म को न्यूनतम हानि भी उठानी पड सकती है क्योंकि अल्पकाल में कीमत कम होने पर भी फर्म हमेशा के लिये उत्पादन करना बंद नही कर देगी। यदि वह केवल थोडे समय के लिये उत्पादन बंद करेगी तो भी उसे स्थिर लागतों की हानि उठानी पडेगी। यह फर्म की न्यूनतम हानि होगी।

असामान्य लाभ
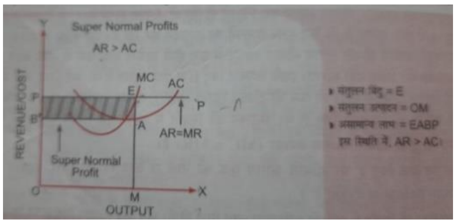

सामान्य लाभ
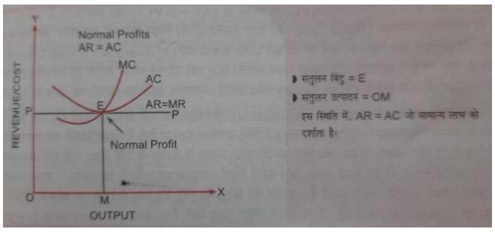

हानि
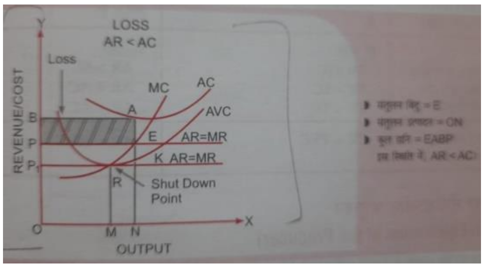

अथवा

कुल लागत :-

किसी वस्तु की एक निश्चितम मात्रा का उत्पादन करने के लिए जो कुल धन व्यय करना पडता है, उसे कुल लागत कहते है। यदि 500 कापियों का उत्पादन करने के लिए कुल 2000 खर्च करना पडता है तो 500 कापियों की कुल लागत 2000 रूपये होगी। अल्पकाल में कुल लागत दो प्रकार की होती है।
1. बंधी लागत (FC)
</td>
<td>
In a situation of equilibrium, it is not necessary that the firm is getting abnormal profits. Three situations can occur in this situation.
1. The firm may get abnormal profits because new firms cannot enter the industry in the short run.
2. The firm can get normal profits.
3. The firm may have to suffer minimal loss because even if the price decreases in the short run, the firm will not stop production forever. Even if it stops production only for a short period, it will have to suffer losses on fixed costs. This will be the minimum loss of the firm.

Abnormal Profit :-
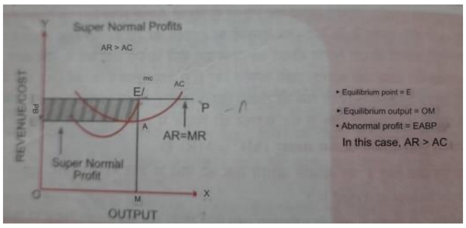

Normal profit:-
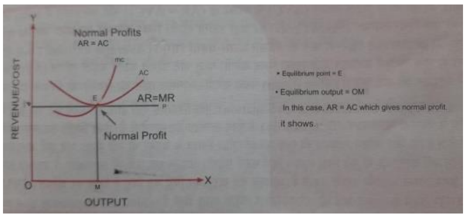

Loss:-
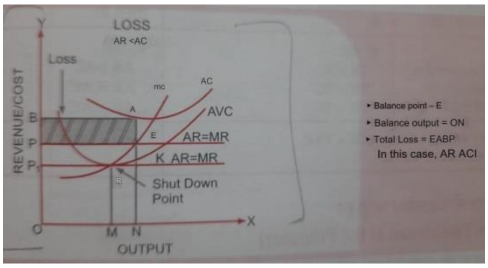

OR

Total Cost :-
The total money that has to be spent to produce a certain quantity of a product is called total cost. For example, if a total cost of Rs 2000 has to be spent to produce 500 copies, then the total cost of 500 copies will be Rs 2000.
There are two types of total costs in the short run.
1. Fixed Cost (FC)
</td>
<td>2+2+2

3+3</td>
</tr>
</table>

	2. परिवर्तनशील लागत (VC) **TC=TFC+TVC** 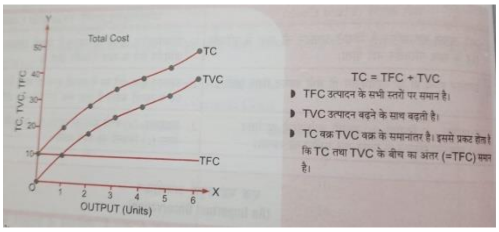 **औसत लागत:-** किसी उत्पाद की प्रति इकाई लागत को औसत लागत कहा जाता है। AC=TC/Q अल्पावधि में, औसत लागत औसत निश्चित लागत और औसत परिवर्तनीय लागत का योग है। **AC=AFC+AVC** 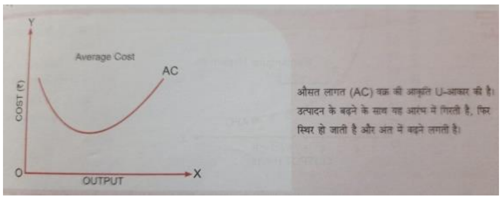 **सीमांत लागत:-** किसी वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने से कुल लागत में जो अंतर आता हैए उसे सीमांत लागत कहते है। MC = ∆TC/∆Q 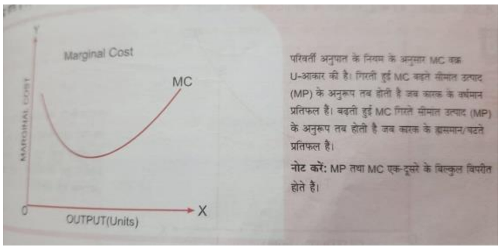	2. Variable Cost (VC) **TC=TFC+TVC** 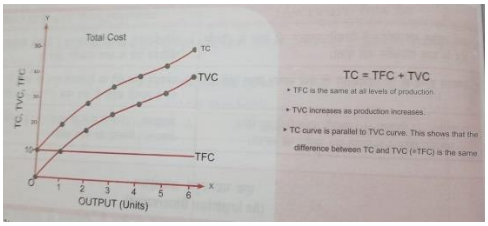 **Average cost:-** The per unit cost of a product is called average cost. AC=TC/Q In the short run, average cost is the sum of average fixed cost and average variable cost. AC=AFC+AVC 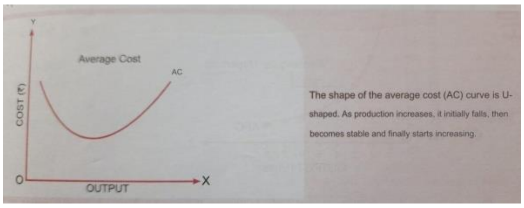 **Marginal cost:-** The difference in total cost incurred by producing an additional unit of a good is called marginal cost. MC = ∆TC/∆Q 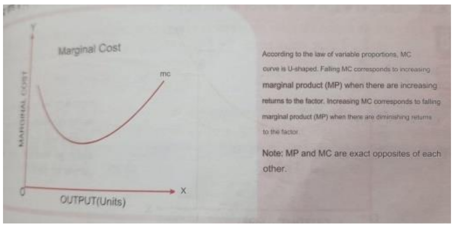	
18	b) सकल निवेश - मूल्यह्रास	b) Gross Investment - Depreciation	1
19	a) अधिक व्यापक	a) More wider	1
20	b) विनिमय के अनुपात से हैं	b) is exchange ratio	1
21	b) अनिवार्य भुगतान	b) Mandatory payment	1
22	d) ये सभी	d) All of these	1
23	सम्पति	wealth	1
24	लाभ	Profit	1
25	एक	One	1
26	d) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।	d) Asseration(A) is false but Reason(R) is true.	1
27	c) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।	c) Asseration(A) is true but Reason(R) is false.	1
28	मध्यवर्ती वस्तुओं को वे वस्तुएं कहा जाता है जिनका उपयोग उद्योग द्वारा वस्तुओं या सेवाओं के उत्पादन के लिए किया जाता है। इन वस्तुओं को उत्पादक वस्तुएँ भी कहा जाता है।	Intermediate goods are those goods which are used by the industry to produce goods or services. These goods are also called productive goods. In other	3

	दूसरे शब्दों में, मध्यवर्ती वस्तुओं का उपयोग अंतिम वस्तुओं या उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन के लिए किया जाता है। मध्यवर्ती सामान - जैसे नमक - भी तैयार उत्पाद हो सकते हैं, क्योंकि इसका उपभोक्ताओं द्वारा सीधे उपभोग किया जाता है और उत्पादकों द्वारा अन्य खाद्य उत्पादों के निर्माण के लिए उपयोग किया जाता है। **अथवा** व्यय विधि वह विधि है जिसके द्वारा एक लेखा वर्ष में बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद पर किए गए अंतिम व्यय को मापा जाता है। यह अंतिम व्यय बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद के बराबर होता हैं। व्यय विधि का प्रयोग करते समय निम्नलिखित सावधनियां आवश्यक हैः- 1. सकल व्यय का माप करते समय, दोहरी गणना से बचने के लिए, केवल अंतिम व्यय को ही उसमें शामिल किया जाना चाहिए। 2. राष्ट्रीय आय की गणना करते समय मध्यवर्ती वस्तु के व्यय को शामिल नही किया जाना चाहिएं 3. सरकार द्वारा हस्तांतरण भुगतान को शामिल नही किया जाता।	words, intermediate goods are used to produce final goods or consumer goods. Intermediate goods – such as salt – can also be finished products, as they are consumed directly by consumers and used by producers to manufacture other food products. **OR** Expenditure method is the method by which final expenditure on GDP at market prices in an accounting year is measured. This final expenditure is equal to the gross domestic product at market prices. The following precautions are necessary while using expenditure method:- 1. While measuring gross expenditure, only final expenditure should be included to avoid double counting. 2. Expenditure on intermediate goods should not be included while calculating national income. 3. Transfer payments by the government are not included.	3
29	वस्तुओं के आदान.प्रदान को सुविधाजनक बनाने की आवश्यकता के कारण मुद्रा का विकास हुआ। दुनिया एक ऐसे चरण से गुज़री जब पैसे का उपयोग नहीं किया गया था और वस्तु विनिमय नामक प्रणाली में वस्तुओं का एक दूसरे के लिए सीधे आदान.प्रदान किया जाता था। वस्तु विनिमय की असुविधाओं और कमियों के कारण धीरे.धीरे विनिमय के माध्यम का उपयोग शुरू हो गया। सभी प्रकार की वस्तुओं का उपयोग विनिमय के माध्यम के रूप में किया गया है। इन्हें कमोडिटी मनी कहा जाता है। कमोडिटी मनी की अपर्याप्तता के कारण धातु मुद्रा, यानी सोना और चांदी का विकास हुआ। धातुओं का उपयोग करते समय एकरूपता की कमी के कारण सरकार ने सिक्के ढालने का नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया। इससे अंततः कागजी मुद्रा बनाने की प्रक्रिया शुरू हुई।	The need to facilitate the exchange of goods led to the development of money. The world went through a phase when money was not used and goods were directly exchanged for each other in a system called barter. Due to the inconveniences and shortcomings of barter, the use of medium of exchange gradually started. All types of goods have been used as a medium of exchange. These are called commodity money. Due to inadequacy of commodity money, metal money, i.e. gold and silver, developed. Due to the lack of uniformity in the metals used, the government took over control of coinage. This ultimately began the process of creating paper currency.	1.5+ 1.5
30	केन्द्रीय बैंक देश क समस्त बैंकिग प्रणाली का सर्वोच्च बैंक है। जो देश की संपूर्ण मौद्रिक तथा बैंकिग प्रणाली को नियंत्रित करता है। इसके मख्य कार्य निम्नलिखित है 1. केन्द्रीय बैंक नोट जारी करता है। 2. केन्द्रीय बैंक सरकार के बैंकर का कार्य करता है। 3. केन्द्रीय बैंक देश के अन्य बैंको के लिए बैंकर का कार्य करता है। 4. बैंको का बैंक होने के कारण, केन्द्रीय बैंक, व्यापारिक बैंको का निरिक्षण का कार्य करता है। अथवा समग्र मांग का अर्थ किसी अर्थव्यवस्था में अंतिम वस्तुओं और सेवाओं की कुल मांग है। यह अर्थव्यवस्था की सभी इकाइयों, यानी घरों, फर्मों, सरकार और बाकी दुनिया का कुल (अंतिम) व्यय है।	The Central Bank is the supreme bank of the entire banking system of the country, which controls the entire monetary and banking system of the country. Its main functions are as follows:- 1. The Central Bank issues notes. 2. The Central Bank acts as the banker of the government. 3. The Central Bank acts as a banker for other banks of the country. 4. Being the bank of banks, the Central Bank does the work of inspection of commercial banks. Or Aggregate demand means the total demand for final goods and services in an economy. It is the total (final) expenditure of all units of the economy, i.e. households, firms, government and the	2+2 4

	कुल मांग के घटक:- AD = C + I + G + (X – M)	of the world. Components of aggregate demand:- AD = C + I + G + (X – M)	
31	गुणक की धारणा केन्ज की आय, उत्पादन तथा रोजगार सिद्धान्त की एक महत्वपूर्ण धारणा है। इस धारणा का संबंध निवेश में होने वाले परिवर्तन के फलस्वरूप् आय में होने वाले परिवर्तन से है। यह एक आर्थिक तथ्य है कि जब निवेश में वृद्धि होती है तो आय में उतनी वृद्धि नही होती जितनी कि निवेश में वृद्धि हुई है बल्कि आय में निवेश की वृद्धि की तुलना में कई गना अधिक वृद्धि होती है। जितने गुना वृद्धि अधिक होती है उसे गुणक कहते है। केन्ज का गुणक सिद्धांत निवेश तथा आय में संबंध स्थापित करता है, इसलिए इसे निवेश गुणक कहते है। गुणक की धारणा निवेश में प्रारंभिक परिवर्तन के परिणामस्वरूप आय में हाने वाले अंतिम परिवर्तन के संबंध को व्यक्त करती है। यह निवेश में होने वाले परिवर्तन के कारण आय में होने वाले परिवर्तन का अनुपात होता है।	The concept of multiplier is an important concept of Keynes' income, production and employment theory. This concept is related to the change in income as a result of change in investment. It is an economic fact that when investment increases, income does not increase as much as investment increases, but income increases many times more than the increase in investment. The greater the increase, the greater it is called a multiplier. Keynes' multiplier theory establishes a relationship between investment and income, hence it is called investment multiplier. The concept of multiplier expresses the relationship between the initial change in investment and the final change in income. It is the ratio of change in income due to change in investment.	2+2
32	बजट सरकार की वार्षिक आय तथा व्यय का ऐसा ब्योरा है जो अ वित वर्ष अप्रैल 1 से मार्च 31 तक के अनुमानों को प्रकट करता है इसमें बीते वर्ष की उपलब्धियों तथा अनुपलब्धियों संबंधी रिपोर्ट भ सम्मिलत होती है। अधिकतर बजट के उस भाग पर विशेष ध्यान दिया जाता है जिसमें आने वाले वर्ष में सरकार की अनुमानित प्राप्तियों (आय) तथा व्यय का ब्योरा होता है। बजट के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है 1. आय तथा संपति का पुनः वितरण करने में सहायता होती है। 2. साधनों का पुनः बंटवारा करने में सहायता होती है। 3. अर्थव्यवस्था में स्थिरता स्थापित करने में सहायक 4. सार्वजिक उद्यमों का प्रबंध करने में सहायक।	The budget is a statement of the government's annua income and expenditure that presents its estimates fo the period from April 1 to March 31 of the next financ year. It also includes reports regarding achievements a non-achievements of the past year. Mostly special attention is paid to that part of the budget which contains details of the estimated receipts (income) an expenditure of the government in the coming year. The main objectives of the budget are as follows 1. Helps in redistributing income and wealth. 2. Helps in redistributing resources. 3. Helpful in establishing stability in the economy 4. Helpful in managing public enterprises.	2+2
33	**वस्तु विनिमय प्रणाली:-** वस्तु विनिमय प्रणाली उस प्रणाली में कहा गया है कि वस्तु का परिवर्तनीय वस्तु से किया जाता है यानी वस्तु का पर्याय वस्तु का लेन-देन होता है। **मौद्रिक प्रणाली:-** मौद्रिक प्रणाली में कागज या सिक्के के सहमत रूप का उपयोग किया जाता है, मुद्रा विनिमय के माध्यम के रूप में कार्य करता है। 1. मौद्रिक प्रणाली में आवश्यकताओं का कोई दोहरा संयोग आवश्यक नहीं है। 2. मौद्रिक प्रणाली में मूल्य का माप संभव है, अर्थात हम प्रत्येक वस्तु को मुद्रा के रूप में माप सकते हैं जो वस्तु विनिमय प्रणाली संभव नहीं है। 3. मौद्रिक प्रणाली में धन संचय करना बहुत आसान है, जो वस्तु विनिमय प्रणाली में संभव नहीं है। मुद्रा के मुख्य कार्य 1. मुद्रा एक विनिमय का माध्यम है। 2. मुल्य का मापदण्ड या इकाई 3. मुल्य का संचय 4. स्थगित भुगतानों का मान	**Barter System:** In that system, it is said that a commodity is exchanged for a convertible commodity i.e. the commodity is exchanged for its equivalent commodity. **monetary system** In monetary system an agreed form of paper or coin is used, currency acts as a medium of exchange while in barter system goods are exchanged. 1. No double coincidence of wants is necessary in a monetary system. 2. Measurement of value is possible in monetary system, that is, we can measure every commodity in terms of money which is not possible in barter system. 3. It is very easy to accumulate wealth in a monetary system, which is not possible in a barter system. **Main functions of money:-** 1. Money is a medium of exchange. 2. Standard or unit of value 3. Store of value 4. Value of deferred payments	2+2+2

	अथवा वास्तविक आय = 500 करोड पूर्ण रोजगार पर आय = 800 करोड वांछित आय में वृद्धि = 300 करोड हम जानते है कि $\Delta Y = K.\Delta I$ तथा $K = \frac{1}{1-MPC} = \frac{1}{1-0.75} = \frac{1}{0.25} = 4$ इस प्रकार, $\Delta I = \frac{\Delta Y}{K} = \frac{300}{4} =$ 75 करोड निवेश में वृद्धि = 75 करोड	**Or** Actual income = 500 crores Full employment income = 800 crores Increase in average income = Rs 300 crore We know that ΔY = K.ΔI And K = 1/(1-MPC) = 1/(1-0.75) = 1/0.25 = 4 Thus, ΔI = ΔY/K = 300/4 = 75 crores Increase in investment = 75 crores	3+3
34	**राजकोषीय नीतिः-** राजकोषीय नीति से अभिप्राय सरकार की बजट या आय तथा व्य संबंधी नीति से है जो अधि मांग या न्युन मांग की स्थितियों को ठी करने के लिए अपनाई जाती है। अन्य शब्दों में. यह नीति देश में क्रय शाक्ति के प्रवाह को नियंत्रि करने के लिए सरकार की आय व व्यय की नीति से है, ताकि स्फीतिक अथवा अवस्फीतिक दबाव को नियंत्रित किया जा सके अधि मांग के फलस्वरूप् अर्थव्यवस्था में मुद्रा-स्फीति या कीमतों वृद्धि की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इसे अर्थात अधि मांग को निय करने के लिए निम्नलिखित राजकोषीय उपाय अननाये जाते हैः- 1. प्रत्यक्ष करों में वृद्धि करके। 2. सार्वजनिक व्यय में कमी करके। 3. घाटे की वित व्यवस्था में कमी करके। 4. सार्वतजनिक ऋण में वृद्धि करके। संक्षेप में, अधि मांग की स्थिति में सरकार को आधिक्य बजट की नीति अपनानी चाहिए। इसके फलस्वरूप् सरकार की आय में वृ होगी तथा व्यय में कमी होगी। **अथवा** बजट की संरचना से अभिप्राय बजट के विभिन्न घटकों से है। इसके दो प्रमुख घटक है। राजस्व बजट एवं पूंजीगत बजट। बजट प्राप्तियों से अभिप्राय एक वितीय वर्ष में सरकार को सभी साधनों से प्राप्त होने वाली अनुमानित मौद्रिक आय से है। इसे भी दो भागों में वर्गीकृत किया गया है। राजस्व प्राप्तियां एवं पूंजीगत प्राप्तियां। राजस्व प्राप्तियों को दो भागो में वर्गीकृत किया जाता है। कर प्राप्तियां एवं करेतर प्राप्तियां।	**Fiscal Policy:-** Fiscal policy means the policy related to budget or income and expenditure of the government which is adopted to correct the situations of excess demand o deficiency. In other words. This policy is the income and expendit policy of the government to control the flow of purchasing power in the country, so that inflationary deflationary pressure can be controlled. As a result of excess demand, a situation of inflation c increase in prices arises in the economy. To control th i.e. excess demand, the following fiscal measures are adopted:- 1. By increasing direct taxes. 2. By reducing public expenditure. 3. By reducing deficit financing. 4. By increasing public debt. In short, in case of excess demand, the government should adopt the policy of surplus budget. As a result the income of the government will increase and expenditure will decrease. **Or** The structure of the budget refers to the various components of the budget. It has two main components. Revenue budget and capital budget. Budget receipts mean the estimated monetary income received by the government from all sources in a financial year. This is also classified into two parts. Revenue receipts and capital receipts. Revenue receipts are classified into two parts. Tax receipts and non-tax receipts.	3+3 3+3

कर प्राप्तियां	करेतर प्राप्तियां
आयकर	फीस, लाइसेंस तथा परमिट
निगम कर	जुर्माना एवं जब्ती
संपदा शुल्क	एसचीट
उपहार कर	सरकारी उद्यमो सेआय
सीमा शुल्क	विशेष आंकन
उत्पाद शुल्क	उपहार
बिक्री कर	अनुदान

tax receipts	Non-tax receipts
Income tax	Licenses and Permits
Corporation tax	fine and confiscation
estate duty	escheat
gift tax	income from government enterprises
Custom duty	special assessment
Excise duty	gift
sales tax	subsidy